पूर्वजों की पेंटिंग की तलाश खींच लाई आर्ट्स कॉलेज

लखनऊ, लोकसत्य

कला और सृजन की सरहदें नहीं होतीं। सृजन सुदूर-देशों के लोगों को एक-सूत्र में बांधता है। यह बातें आस्ट्रेलिया के शोधकर्ता डॉ लिलि हिर्श और डॉ वर्ना वेलवेट पर सटीक बैठतीं हैं। अपने पूर्वजों की पेंटिंग खोजते आस्ट्रेलिया से लखनऊ आईं लिलि और वर्ना का खुशी का ठिकाना नहीं रहा। जब उन्हें अपने पुरखे मशहूर चित्रकार किरण सिन्हा की दुर्लभ पेंटिंग मिली।

राज्य ललित कला अकादमी कैसरबाग में आस्ट्रेलिया के शोधकर्ता डॉ लिलि हिर्श और डॉ वर्ना वेलवेट अपने पूर्वज चित्रकार किरण सिन्हा की पेंटिंग देखने आये थे। जब उन्हें पांच दशक पुरानी अपने पूर्वज की पेंटिंग और ड्राइंग मिली तो उनमें खुशी का ठिकाना नहीं रहा। राज्य ललित कला अकादमी के वरिष्ठ कर्मचारी साहब बक्श ने बताया कि यह पेंटिंग वर्ष 1968 में अकादमी को डोनेट की गईं थीं। जो लखनऊ यूनिवर्सिटी के तत्कालीन वाइस चांसलर राधाकमल मुखर्जी के निजी संग्रह में थीं। अकादमी के कला संग्रह में चित्रकार किरण सिन्हा की एक ड्राइंग है। जिसमें उन्होंने गुरु रवींद्रनाथ टैगोर को रेखांकित किया है। दूसरे में संथाली समूह के आयल कलर में कैनवस पर चित्रित किया है। कला एवं शिल्प महाविद्यालय के प्रो. आलोक कुशवाहा ने बताया कि यह पेंटिंग उसी दौर की हैं जब वर्ष 1965 में पेंटिंग और ड्राइंग की प्रदर्शनी लगाई थी। तत्कालीन मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी ने उद्घाटन किया था। प्रो आलोक कुशवाहा ने बताया कि चित्रकार किरण सिंह बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट के प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस के शिष्य थे। वह शांति निकेतन में बतौर अध्यापक कार्यरत रहे। उनकी पत्नी ग्रेटी आस्ट्रेलिया मूल की थीं। जो चेन्नई स्कूल ऑफ आर्ट में अध्यापिका थीं। दोनों आखिरी समय तक शांति निकेतन में ही रहे। उनकी बेटी कोमाकी बुलबुल की 26 वर्ष में असमय निधन हो गया था।

आस्ट्रेलिया से आये उनके वशंज वर्ना और लिलि ने बुलबुल की याद में आर्ट गैलरी आस्ट्रेलिया में ही बनाई है। अब वह किरण सिन्हा की कलाकृतियों के संग्रह और शोध पर काम कर रहे हैं। mकला एवं शिल्प महाविद्यालय के प्रिंसीपल रतन कुमार ने बताया कि बुधवार को आस्ट्रेलिया की शोधकर्ता डॉ लिलि हिर्श और डॉ वर्ना वेलवेट का स्टूडेंट्स के लिए व्याख्यान हुआ।

चित्रकार किरण का सृजन किया साझा

लखनऊ, लोकसत्य। डॉ लिलि हिर्श और डॉ वर्ना वेलवेट ने बताया कि किरण सिन्हा हमारे पूर्वज हैं। भारत आने की मुख्य वजह किरण सिन्हा के चित्रों पर शोध व मूल्यांकन कर उनके सृजन को प्रकाशित करना है। हम उनकी कला यात्रा को संजोने के लिए गवर्नमेंट कालेज, शांतिनिकेतन, बांग्लादेश सहित अन्य आर्ट्स कालेज व ऑर्ट गैलरियों से संपर्क कर रहे हैं। डॉ लिलि और डॉ वर्ना ने स्टूडेंट्स को पॉवर प्वाइंट प्रजेंटेशन के जरिये किरण सिन्हा की सृजन यात्रा और कलाकृतियों के बारे में बताया। उनकी शैली की विशेषताओं को साझा किया। इस दौरान कला एवं शिल्प महाविद्यालय के प्रिंसीपल रतन कुमार, कार्यक्रम क्यूरेटर आलोक कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में रविकांत पांडेय, अमृत सिन्हा, विभावरी सिंह सहित अन्य शिक्षक, स्टूडेंट्स मौजूद रहे। 'गाल स्कूल ऑफ आर्ट आमतौर पर बंगाल स्कूल के रूप में जाना जाता है, यह एक कला आंदोलन और भारतीय चित्रकला की शैली थी, जिसका जन्म बंगाल, मुख्य रूप से कोलकाता और शांतिनिकेतन में हुआ था, और 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटिश राज के दौरान पूरे भारत में विकसित हुआ था। शुरुआती दिनों में 'पेंटिंग की भारतीय शैली' के रूप में भी जाना जाता है, यह भारतीय राष्ट्रवाद (स्वदेशी) से जुड़ा हुआ था और अवनिंद्रनाथ टैगोर (1871-1951) की अगुवाई में था, लेकिन ब्रितानी कला प्रशासकों जैसे ईबी हैवेल, प्रिंसिपल द्वारा भी उन्हें बढ़ावा दिया और समर्थित किया गया था। 1896 से कोलकाता के सरकारी कॉलेज ऑफ कोलकाता; आखिरकार इसने आधुनिक भारतीय चित्रकला के विकास को जन्म दिया।

The search for the paintings of our ancestors brought us to the Arts College

Lucknow, Loksatya. Page 2, 12 January 2023

Art and creation have no boundaries. Creation binds people of distant lands in one thread. These sayings fit Australian researchers Dr. Lily Hirsch and Dr. Verna Blewett. Lily and Verna, who came to Lucknow from Australia in search of paintings of their ancestors. They were extremely happy when they located a rare painting of their ancestor, the famous painter Kiron Sinha.

Australian researchers Dr. Lily Hirsch and Dr. Verna Blewett visited the State Academy of Fine Arts/ Lalit Kala Akademi in Kaiserbagh. They were searching for a five-decade-old painting and a drawing by their ancestor, painter Kiron Sinha. When they found them they were overjoyed. Saheb Baksh, a senior employee of the State Academy of Fine Arts said that the drawing had been in the personal collection of Radakamal Mukherjee, the then Vice Chancellor of Lucknow University and was donated to the Academy in 1968 upon his demise. The drawing is like Rabindranath Tagore. In a painting also owned by the Academy, a Santali group has been painted in oil colours on canvas. Professor Alok Kumar or the Arts and Crafts Collage said that this painting was exhibited in Lucknow in 1965. The exhibition was inaugurated by the then Chief Minister Sucheta Kripalani.

Professor Alok Kumar said that the painter Kiron Sinha was a disciple of Nandalal Bose, a famous painter of the Bengal School of Art. He worked as a teacher in Santiniketan. His wife, Gertrude was of Austrian origin. She was a teacher at a school in Chennai. Both artists remained in Santiniketan until the end. Their daughter Kamona / Bulbul died untimely at the age of 26.

Shared the creation of painter Kiron

Principal of the Arts and Crafts College, Ratan Kumar said that Australian researchers Dr Lily Hirsch and Dr Verna Blewett gave a lecture to the students on Wednesday. Dr Lily Hirsch and Dr Verna Blewett told the audience that Kiron Sinha was their ancestor. The main reason for coming to India is to research Kiron Sinha's paintings to see that his works are recognised, and to cherish his art journey. They are contacting other arts colleges and art galleries in India, including in Santiniketan.

Using a power point presentation, Dr Lily and Dr Verna told the students about Kiron's life and his creative journey. They shared features of his artistic style.

The Principal of the Arts and Crafts College, Ratan Kumar, and program curator Alok Kumar welcomed the guests. Ravikant Pandey, Amrit Sinha, Vibhavari Singh, and other teachers and students were present.

The Bengal School of Art was an art movement and style of Indian painting that originated in Bengal – mainly in Kolkata and Santiniketan. It developed under the British in the early 20th century. Also known as the 'Indian style of painting' in the early days, it was associated with Indian nationalism (Swadeshi) and was led by Abanindranath Tagore (1871-1951) as well as the British art administrator E. B. Havell, the principal of the Government School of Art, Calcutta. Eventually this led to the development of modern Indian painting.

Kiron and his wife were both artists and art teachers. Both remained in Santiniketan until their last. Their daughter Kamona/ Bulbul died untimely at the age of 26. Their descendants, Verna and Lily, who come from Australia have set up an Art Gallery in Australia which is created in memory of Bulbul and her parents. They are now working on researching the art and life of Kiron Sinha.